आर्योदय
ARYODAYE

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE
- VEDA

Aryodaye Weekly No. 270 | ARYA SABHA MAURITIUS | 26th May to 9th June 2013

Om ! Vidyām chāvidyām cha, yastad védabhayam saha.
Avidyayā mrityum tirtavā, vidyayā mritamashnuté.

(Ishopanishad) Yajur Véda 40-14)

Yaha – celui qui adopte, **Vidyām cha** – la voie de la connaissance/du savoir/de l'érudition, **Avidyām cha** – la voie de l'action, **Tat ubhayam** – ces deux facteurs, **Saha** – Simultanément/en même temps, **Véda** – qui à la connaissance, **Avidyayā** – par l'action, **Mrityum** – la mort, **Tirtavā** – évite, esquive, triomphe de, **Vidyayā** – par la connaissance, **Amritam** – la béatitude/la félicité éternelle/'Moksha' en Hindi.

Pour que l'on puisse atteindre le but ultime de la vie, c'est-à-dire, la félicité éternelle/ la béatitude/ ou 'Moksha' en Hindi, le Seigneur nous conseille sérieusement que la notion parfaite du savoir ('Vidyā' en Hindi) et de l'action ('Avidyā' en Hindi) est indispensable. Ces deux disciplines doivent être acquises simultanément et mises en pratique car elles se complémentent. L'une ne peut fonctionner sans l'autre.

Afin d'éviter toute confusion à ce sujet, il nous faut, au préalable, bien définir ces deux atouts-clefs de notre vie :

Le Savoir - Vidyā, Jyāna, Jyāna Mārga ou Jyāna Yoga – en Hindi
L'action – Avidyā – Karma, Karma-Mārga ou Karma Yoga – en Hindi

Vidyā – c'est la voie de la connaissance, du savoir et de l'érudition. En d'autres mots, c'est l'acquisition de connaissance dans plusieurs disciplines ou domaines.

Cela comprend aussi 'Dharma' en Hindi, c'est-à-dire la connaissance de soi-même et de l'Etre Suprême (Dieu) qui nous accorde le pouvoir de discernement (à distinguer le bien et le mal, la justice et l'injustice, etc.)

N. Ghoorah

cont. on pg. 4

पल्लवन

विद्या का महत्व

डॉ० उदय नारायण गंगू,ओ.एस.के.,आर्य रत्न

विद्या हमारी सच्ची सम्पत्ति है। यह हमारे मन-मस्तिष्क का प्रकाश है। वर्तमान युग में सभी विद्यार्जन करने की दौड़ लगा रहे हैं। विद्यार्थी विभिन्न विषयों का अध्ययन कर रहे हैं। खेद है कि बहुत से अध्येता जीवन भर हाथ-पाँव मारने के बावजूद भी सच्ची विद्या के अधिकारी नहीं बनते। वे तथाकथित विद्वान् तो बन जाते हैं, पर विद्या का वरदान पाते नहीं । वे आजीवन अन्धविश्वास के जाल में जकड़े दृष्टिगोचर होते हैं। विद्या तो बन्धन से मुक्त करती है। कहा गया है – **'सा विद्या या विमुक्तये'** – जो मुक्त करती है, जो अज्ञान का बन्धन काटती है, वही विद्या है। विद्या केवल प्रकृति के स्वरूप का ही बोध नहीं कराती, अपितु आत्मा और परमात्मा के सत्यस्वरूप का भी ज्ञान कराती है। विद्या हमारी बुद्धि को ज्योति से जगमगा देती है, आत्मा को परमात्मा में लीन करके सांसारिक कष्टों से मुक्त कर देती है। जो सच्ची विद्या का उपार्जन करते हैं, उनकी छिपी मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक शक्तियाँ मूर्त हो जाती हैं। अविद्या और अन्धविश्वास की अंधियारी नष्ट हो जाती है।

विद्या के उपासक का जीवन तप-त्याग का होता है। जो सुखार्थी होता है, वह विद्यार्थी नहीं बन सकता। निर्धन परिवार में उत्पन्न अनगिनत बच्चे विद्या की कठिन साधना करके सरस्वती के कृपा-भाजन बनकर असंख्य जनों को बन्धनों से मुक्त कर गये हैं।

पल्लवन

'परोपकाराय सतां विभूतयः'

सज्जनों की सम्पत्ति परोपकार के लिए होती है। संस्कृत की यह सूक्ति मानव को देवत्व का पाठ पढ़ाती है। सज्जन देव है और दुर्जन दानव। सज्जन दूसरों की भलाई करने में अपना सर्वस्व अर्पण कर देते हैं। उनका उठना-बैठना, चलना-फिरना, उनके जीवन की एक-एक साँस, उनके रक्त की एक-एक बूँद, उनके दिल की एक-एक धड़कन उनके समय का एक-एक क्षण परहित में ही व्यतीत होता है।

इतिहास के पन्ने सज्जनों की कहानियों से गौरवान्वित हैं। देश-भक्तों ने अपनी मातृभूमि की रक्षा में अपने प्राणों की आहुति दे दी। साधु-सन्तों, योगी-तपियों एवं ऋषि-मुनियों ने धर्म की स्थापना और अधर्म के नाश में क्या नहीं किया। धर्मवीरों, कर्मवीरों और दानवीरों ने अपने कठोर तप-त्याग से अर्जित समस्त सम्पत्ति को परोपकार में लुटा दिया। सदियों से उनकी सुगन्ध वातावरण को सुगन्धित कर रही है।

सज्जन वही होता है, जो सबको समदृष्टि से देखता है। वह भेद-भाव की दीवारों को धराशायी करके विश्व-बन्धुत्व का पाठ पढ़ाता है। सज्जन की सज्जनता का बखान करते-करते वाणी थक जाती है, पर उसकी सुकृति का अन्त दिखाई नहीं देता। सज्जनों से ही इस धरती की शोभा है।

सम्पादकीय

अपूर्व ज्ञान सरोवर

सत्यार्थप्रकाश सत्य ज्ञान का एक अद्‌भुत भण्डार है। यह महान् ग्रंथ महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की समस्त रचनाओं में सर्वोत्तम है। महर्षि जी ने बड़ी गहराई के साथ पुरान, जैनियों के ग्रन्थ, बाईबल, कुरान आदि मत मतान्तरों के धार्मिक ग्रन्थों को कई बार अध्ययन किया था। जब उन्हें सत्यासत्य की पूरी पहचान हुई, तब उन्होंने विद्वता पूर्वक अपनी दूरदर्शित शक्ति द्वारा सत्यार्थप्रकाश की रचना की, जो हर युग में मानव समाज के लिए हितकर साबित होगा, इसीलिए इस ज्ञान सरोवर को कालजयी ग्रन्थ कहते हैं।

महर्षि दयानन्द जी द्वारा रचित सत्यार्थप्रकाश एक अनुपम और शिक्षाप्रद ग्रन्थ है। इस सत्य-शाश्वत महान् ग्रन्थ के पठन-पाठन, मनन-चिन्तन करने से मानव जाति को सत्य विद्याओं का ज्ञान होता है। प्रश्नोत्तरों द्वारा सत्य और असत्य परखने का अवसर प्राप्त होता है। मिथ्या, पाखण्ड, भ्रम, अन्धविश्वास और कुकर्म से बचने की शिक्षा इस ग्रन्थ में दी गई है। जो भी व्यक्ति सत्यार्थप्रकाश का नित्य स्वाध्याय करता है और प्राप्त ज्ञान को अपने जीवन में उतारता है, उसका कल्याण निश्चित है।

सत्यार्थप्रकाश एक ऐसा अपूर्व ग्रन्थ है, जिसमें अनेक मत-मतान्तरों के दोषों की सही जानकारी है। यह ज्ञानदायक ग्रन्थ समस्त प्राणियों के लिए लाभप्रद है। इसकी कथाएँ सुनकर नासमझ भी समझदार हो जाते हैं। जिस प्राणी के हाथ में यह ग्रन्थ पड़ता है, वह इसे पढ़कर तर्क-वितर्क द्वारा सत्य के आलोक में आ जाता है। अपनी महानता का सही प्रमाण देकर आज सत्यार्थप्रकाश लगभग पचीस भाषाओं में अनुवादित है। विश्व के धार्मिक ग्रन्थों में इसकी मान्यता अधिक बढ़ती जा रही है। यह अन्यतम ग्रन्थ सचमुच सत्य-ज्ञान का महा भण्डार है, इस ज्ञान रूपी भण्डार से जितना अधिक ज्ञान ग्रहण करने का प्रयत्न करेंगे, उतना ही हमारा कल्याण होगा।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी एक सर्वश्रेष्ठ धार्मिक प्रतिनिधि बनकर भारत की पुण्य भूमि पर पैदा हुए थे। मानव समाज को घोर अविद्या के अन्धकार से हटाकर सत्यविद्या का प्रकाश दिखाने आए थे। उनके समान महामानव कई सदियों बाद उत्पन्न होते हैं। ऐसे वरदपुत्र की सात्विक वाणी कंठाग्र करने योग्य होती है, आनन्दप्रिय और अति लाभदायक होती है। उसकी रचनाओं का हर एक वाक्य जन उद्धारक होता है, इसीलिए महर्षि जी के सारे धर्मोपदेश तथा रचित ग्रन्थ जन हितैषी और लोकप्रिय हैं।

मानव हितकारी महर्षि दयानन्द जी ने मनुष्य जाति के लिए जितने अद्‌भुत कार्य किए हैं, वे अद्वितीय हैं। उनकी शिक्षाप्रद रचनाएँ तो हमारे शारीरिक, बौद्धिक, आत्मिक और आध्यात्मिक उत्थान करने में अति सहायक हैं, जिनमें सत्यार्थप्रकाश हर युग में एक आदर्श ग्रन्थ माना जाएगा। इस अपूर्व ग्रन्थ के अध्ययन करने से दुर्जन भी सज्जन हो जाते हैं, नासमझ व्यक्ति समझदार हो जाते हैं। इस ज्ञान सरोवर में गोता लगाकर हमारी बुद्धि विकसित होती है, मानसिक भावनाएँ पवित्र होती है और आत्मिक आनन्द का अनुभव होता है।

महर्षि जी तो मनुष्य की मनोभावनाएँ पहचानने वाले महात्मा थे। वे भली-भाँति जानते थे कि मानव सत्य-असत्य, न्याय-अन्याय, धर्म-अधर्म जानने वाले होते हैं, फिर भी अपने प्रयोजन को पूरा करने के लिए हठ, दुराग्रह, आदि के कारण कभी-कभी असत्य, अन्याय, अकर्म और अधर्म की ओर प्रवृत हो जाते हैं। इसी उद्देश्य से उन्होंने सत्यार्थप्रकाश लिखा। इस ज्ञानागार में संचित सत्यज्ञान को ग्रहण करना हमारा परम कर्तव्य है।

सत्यार्थप्रकाश जैसे पावन ग्रन्थ को बड़ी निष्ठा पूर्वक अध्ययन करने और आस्था के साथ इसकी कथाएँ सुनने से परम आनन्द प्राप्त होता है। बाल, किशोर, गृहस्थ, वृद्ध, वानप्रस्थी और संन्यासी सभी लोग अवश्य ही सत्यालोक पाने में सफल हो जाते हैं।

आर्य सभा की यही कामना है कि 'सत्यार्थप्रकाश मास' के अंतर्गत पुरोहित-पुरोहिताओं, प्रचारकों एवं शिक्षकों द्वारा समस्त शाखा समाजों में बड़ी व्यवस्था पूर्वक इस ज्ञान दायक ग्रन्थ का पठन-पाठन, कथाएँ आदि आयोजित हों ताकि हमारे युवावर्ग इसके सत्य-ज्ञान से प्रभावित हो सके और इसको अध्ययन करने के लिए केवल आर्य समाज के सदस्य ही नहीं, बल्कि समस्त हिन्दू परिवार ललायित हों ।

बालचन्द तानाकूर

सत्यार्थप्रकाश का महीना

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के, आर्य रत्न

हर साल जब जून का महीना आता है तो हम सोचने लगते हैं कि सत्यार्थप्रकाश का महीना मनायेंगे, क्योंकि स्वामी जी ने १२ जून सन् १९७४ को अपने कालजयीग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश लिखने का उपक्रम किया था। पंडित लोग लिखते जाते थे और स्वामी जी श्रुति लेख करते जाते थे। केवल लगभग ९० दिन लगे इतने भारी भरकम ग्रन्थ लिखवाने में और वह भी ऐसी भाषा में जिसे उन्होंने हाल में सीखना आरम्भ किया था। इससे पहले स्वामी जी संस्कृत बोला करते थे, जब अपने उच्च कोटि के व्याख्यान देते थे। उनकी मातृ भाषा तो गुजराती थी।

यहाँ पर थोड़ा रुक कर हम यह बोलना चाहते हैं कि स्वामी जी के इस विचार को दिल की गहराई से स्वागत करते हैं। यदि स्वामी जी चाहते तो अपनी मातृ भाषा गुजराती या संस्कृत में लिखते। पर ऐसा न करके खड़ी बोली हिन्दी में लिखकर अपने ऋषि होने की दूरदर्शिता का अच्छा परिचय दिया। भारत में राष्ट्रभाषा स्थापित करने का पहल किया। स्वामी जी के समय में अभी भारत को एक राष्ट्र बनाने का सपना भी नहीं देखा गया था। उनको मालूम था कि भारत को छोटे छोटे राज्यों में विभाजित नहीं रख सकेंगे। एक राष्ट्र बनेगा। एक राष्ट्र को पिरोकर रखने हेतु एक भाषा होगी। एक धर्म होगा जैसे एक भगवान होता है अनेक नाम वाले।

ओल इण्डिया नास्यनल काँग्रेस (All India National Congress) अभी भविष्य के गर्भ में था। उसकी स्थापना ११ वर्ष बाद सन् १८८५ में होती है। आधी शताब्दी बाद जब भारत को स्वाधीनता प्रदान करने की लड़ाई ज़ोर पकड़ती है, तब भाषा की राष्ट्रीय नीति निर्धारित होती है। गांधी जी के नेतृत्व में हिन्दी ही को राष्ट्र भाषा बनने का सौभाग्य प्राप्त होता है। ज्योंहि हिन्दी को उसकी उपयुक्त स्थान देने की चर्चा शुरू हुई भारत में झगड़ा-फ़साद होने लगा। भाषा के नाम पर सूबा बनाना शुरू हो गया। किसी किसी प्रान्त में आज भी हिन्दी का ज़ोरदार विरोध जारी है, जब कि अँग्रेज़ी गले का हार बनी हुई है।

स्वामी दयानन्द ने छोटे-बड़े ग्रन्थों का प्रणयन हिन्दी में करके अपना नाम भारतेन्दु काल के गद्य के इतिहास में अपना नाम बना लिया।

हिन्दी के आधुनिक काल के सबसे बड़े कहानीकार, उपन्यास कार प्रेमचन्द ने कहानी का सृजन हिन्दी में न कर उर्दू में किया था। जब 'सोज़ेवतन' लिखने के बाद अंग्रेज़ी सरकार ने राजद्रोह घोषित किया तब जाकर उन्होंने अपना नाम नवाबराय से बदल कर प्रेमचन्द रखा और उर्दू जुबान को बदल खड़ी बोली हिन्दी में लिखना पड़ा।

लेकिन स्वामी दयानन्द ने बहुत पहले हिन्दी को अपनाया था। यही वजह है कि उन्नीसवीं शताब्दी के तीसरे-चौथे दशक में जहाँ कहीं भी भारतीय शर्तबन्ध मज़दूर गये वहाँ भोजपुरी लेकर गए और आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में हिन्दी का प्रयोग किया। उन सभी देशों में आज हिन्दी बुलंदी पर है। फ़ीजी में तो हिन्दी संसद (Parliament) में पहुँच गई थी। मोरिशस में तो पूर्व प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालय तक हिन्दी पहुँच गई है। इस में सत्यार्थप्रकाश का बहुत बड़ा सहयोग है।

आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह

इस साल भव्य रूप से राष्ट्रीय स्तर पर मोरिशस के दक्षिण, सावान प्रान्त में आर्य सभा मोरिशस के तत्वावधान में तथा देश के सभी शाखा समाजों के सहयोग से आर्य समाज स्थापना दिवस तथा नवसंवत्सर सुयाक स्थित आर्य समाज (Sub Centre) उपकेन्द्र में ११ अप्रैल २०१३ ई० को त्रिदिवसीय महायज्ञ से शुरू हुआ था। यज्ञ-ब्रह्मा आचार्य विरजानन्द उमा जी थे तथा आचार्य बितुला शास्त्री जी के साथ सावान और अन्य प्रान्तों के अनेक पुरोहित-पुरोहिताएँ यज्ञ सम्पन्न कर रहे थे।

मंगलवार ०९.०४.१३ तथा बुधवार १०.०४.१३ महायज्ञ शाम के तीन से छः बजे तक चला। नित्य प्रति शाम को भोजन से सत्कार किया गया। पूर्णाहुति गुरुवार ११.०४.१३ सवेरे ९.०० से १२.०० बजे तक सभी पंडित-पंडिताओं द्वारा महायज्ञ की पूर्णाहुति हुई। महायज्ञ का मुख्य यजमान श्रीमान् तथा श्रीमती विनोद पद्दू थे।

मंच पर आसीन थे आर्य सभा के सभी अंतरंग सदस्य तथा अनेक विशिष्ट अतिथि। कार्यक्रम M.B.C. T.V. द्वारा सीधा प्रसारित हुआ। आर्य सभा मोरिशस के महामन्त्री श्री सत्यदेव प्रीतम जी द्वारा क्रम से प्रोग्राम प्रस्तुत किया गया जिसे सभी लोग बहुत ध्यान तथा शान्ति पूर्वक सुन रहे थे। पंडाल पन्द्रह सौ लोगों से कचाकच भरा हुआ था। ठीक ९.३० बजे श्री देवचन्द बिसम्बर जी अपनी मंडली के साथ भजन प्रस्तुत किया। द्वार पर सावान-ब्लाक रिवर तथा सुयाक आर्य समाज के तीनों प्रधान द्वारा स्वागत सत्कार बहुत आदर के साथ किया गया।

यज्ञ के बाद सभी लोग बाढ़ से पीड़ित लोगों की शांति के लिए एक मिनट का मौन धारण किया। उसके बाद आर्य सभा मोरिशस के प्रधान श्री हरिदेव रामधनी जी द्वारा स्वागत संदेश हुआ और पं० श्याम दयबू जी द्वारा भजन-उपदेश हुआ। उसके पश्चात् माननीय मन्त्री श्री अनिल कुमार बेचु जी द्वारा आजपूर्ण भाषण हुआ। बारी बारी से कार्यक्रम इस तरह रहा – सुयाक गुरुकुल के बच्चों द्वारा, आर्य समाज के दस नियम पढ़े गए, जिससे सभी लोग प्रभावित हुए। सावान आर्य ज़िला परिषद् के मन्त्री श्री राजेन्द्र प्रसाद रामजी जी द्वारा मौके का सन्देश हुआ। वेद प्रचार समिति के प्रधान डा० उदयनारायण गंगू जी, विदेश मंत्री अरवीन बुलेल, श्री रविन जगरनाथ, श्रीमती धन्वन्ती रामचर्ण के सन्देश हुए। अन्त में परिषद् के प्रधान श्री भगवानदास बुलाकी जी द्वारा धन्यवाद समर्पण किया गया।

शान्ति पाठ के बाद कुछ लोग बैठकर भजन सुन रहे थे, तो कुछ दानी लोग कतार लगाकर दान दे रहे थे। सभी लोगों का सत्कार भोजन से किया गया। इस सफल आयोजन के लिए सभी अतिथियों ने आयोजक समिति के कर्मठ सदस्यों की भूरी-भूरी प्रशंसा की ।

चमन में रहेगी बहार, तो फूल खिलते रहेंगे।
जीवन में रहेंगे हम, तो मिलते रहेंगे ।।

राजेन्द्र प्रसाद रामजी
मन्त्री
सावान आर्य ज़िला परिषद्

माँ है महान्

नवीन लक्ष्मण

इस बात से सभी लोग सहमत हैं कि घर-परिवार में माँ ही सब से महान् है। यथार्थ में माँ को सदा ऊँचा स्थान प्राप्त है। वह गृहलक्ष्मी है। उसके बिना घर सूना-सूना लगता है। उसकी अनुपस्थिति में कोई भी कार्य सुचारु रूप से संपन्न नहीं हो सकता। जिस प्रकार से धरती माता सबका भार वहन करती है और बिना कोई शिकायत किए सबको तरह-तरह के अन्न प्रदान करती है, ठीक इसी तरह से जननी माँ बड़े धैर्य के साथ सबके बीच में आने वाली रुकावटों को हटाती है, सभी के दुखों को हरती है तथा अनेक कष्टों को खुद झेलकर घर के लोगों को संतुष्ट रखती है। माँ परिवार के हर एक सदस्य को प्रसन्न रखने की कला जानती है। अतः वह प्रत्येक के दिल में अपनी जगह बना लेती है।

जब एक लड़की की शादी होती है वह पत्नी बनती है और पत्नी के लिए माँ बनना सबसे बड़ा अहसान है। इस उपकार के उऋण होना उसकी संतान के लिए असम्भव है। माँ ही जन्म दात्री है और अपने को भाग्यशाली मानकर वह अपनी संतानों की दुनिया बनाती है। अपनी गोद रूपी विश्व-विद्यालय में उन्हें बिठाकर वह सर्वोच्च शिक्षा देती है। यह एक सच्ची बात है कि एक माँ की जान हमेशा अपने बच्चों में बसी होती है। सामने में कोई भी हो, माँ के आगे किसी की परवाह नहीं है। वह अपने बच्चों को पहले प्रसन्न करती है और उनके सारे दुख को अपनाकर उन्हें सुख प्रदान करती है तथा उन्हें सर्वदा सुरक्षित रखती है। ऐसा वरदान ऐसी सद्भावना एवं दया, ऐसा सर्वश्रेष्ठ एवं उत्तम गुण केवल माँ को ही प्राप्त है।

माँ प्यार का असीम भंडार है। माँ दया की मूर्ति एवं क्षमा की देवी है। जीवन के हर क्षेत्र में माँ ही बच्चों को सही ढंग से जीना सिखाती है। इसीलिए वह प्रथम गुरु कहलाती है और विद्या-देवी सरस्वती से उसकी तुलना सुसंगत है। माँ की ममता अति प्यारी है। माँ की गोद ही में सबसे बड़ा सुख मिलता है। माँ के अंदर बहुत बड़ी शक्ति है। इसीलिए वह अपने उलझनों को सुलझाने में समर्थ है। माँ की जगह कोई नहीं ले सकता। घर की कमियों को वही जानती है। माँ का दिल सोने के समान बहुमूल्य है। याने कि माँ में ही हृदय का भाव है। माँ में ही वात्सल्य है। माँ ही सच्ची हितैषी है। माँ हमेशा भला करती है और सबकी भलाई हेतु वह हर प्रकार की मुसीबतों का सामना करने के लिए तैयार रहती है। लेकिन आज के ज़माने में संतानें माँ की आज्ञा का उल्लंघन करती हैं। वृद्ध माँ का निरादर एवं अपमान होता है और उसकी अच्छी देख-रेख नहीं होती है। सुख में वे माँ को भूल जाते हैं। संकट आने पर माँ की याद आती है। किसी को यह नहीं सोचना चाहिए कि वृद्धा माँ कुछ काम की नहीं है। माँ तो सदैव काम आती है और वह कभी भी अपने बच्चों को नहीं भुला पाती, बल्कि उन्हें अपनी सुखद छाया में रखना चाहती है। इसीलिए आँखें मूँदकर माँ की आज्ञा का पालन करना चाहिए। कहा भी गया है कि माँ का आदेश भगवान् का आदेश है। अतः सदा माँ की खबर लेना हरेक व्यक्ति का परम एवं पुनीत कर्तव्य है।

बच्चों की सबसे बड़ी शुभचिन्तक माँ ही है जो उन्हें सदा सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है। माँ अच्छी सहलाकार भी है। उसकी प्यारी निगरानी में बच्चा ग़लत राह पर नहीं जा सकता। माँ की दुआओं के फलस्वरूप बच्चों को मान्यता प्राप्त होती है। जिसे माँ का श्रेष्ठ मार्गदर्शन, स्नेहयुक्त सहयोग तथा शुभ वरदान मिलता है, वह पूरी जिंदगी में सुख से परिपूर्ण होता है।

अन्त में यही कहेंगे कि माँ इस धरती पर देवी तुल्य है। माँ ही सर्वस्व है। माँ के सामने ही सतत झुकना, उनके समक्ष सतत नतमस्तक होना, माँ का हमेशा गुणगान करना तथा सदैव उनको नमस्कार करना ही उचित समझा जाता है। जीवन के पूर्ण विकास के लिए बच्चों को माँ की दुआ, आशीर्वाद लेना या पाना परम आवश्यक है। ज़रा सोचिए, स्वयं देखिए कि माँ कितनी महान् है। एक स्वर में बोलिए — घर की देवी जननी माँ की जय हो।

सत्यार्थप्रकाश

वत्सला राधाकिसुन

धर्म का आक्रमण कर दिया था कुछ पापी पाखंडों ने,
मनुष्य उलझ गया था एक मायावी चक्रव्यूह में ।
इन्सान को न था इन्सान से प्यार,
अहंकार ने बना दिया था जीवन को बेकार ।

घोर अंधकार में चमक उठा एक निडर, साहसी तारा,
महर्षि दयानन्द ने दृढ़ता से सत्यार्थप्रकाश रचा,
उस ग्रंथ ने सत्य अर्थ पर प्रकाश डाला ।

सत्यार्थप्रकाश ने हमें सिखाया सत्य को सत्य मानना, मिथ्या को मिथ्या,
सत्यार्थप्रकाश ने हमें सिखाया ईश्वर की सही पहचान, सच्चे धर्म का ज्ञान,
सत्यार्थप्रकाश ने हमें सिखाया सुमार्ग पर चलना, जीवन को पुण्य बनाना,
सत्यार्थप्रकाश ने हमें सिखा दिया जीने की एक अनमोल कला ।

सत्यार्थप्रकाश बन गया है सभी आर्यों का प्रिय ग्रंथ,
वह मन में जगाता है अटूट उमंग,
कभी नहीं छोड़ेंगे हम विजयी सच्चाई का संग ।

सदा अमर रहेगा सत्यार्थप्रकाश हमारे हृदय में,
और वह खोल देगा हर पीढ़ी की आँखें एक ही पल में ।

दैनिक अग्निहोत्र

पं० यश्वन्तलाल चूड़ामणि

सभी गृहस्थियों के लिए अग्निहोत्र एक महत्वपूर्ण दैनिक यज्ञ माना गया है, जिसे प्रतिदिन दो बार, अर्थात् प्रातः और सायं करने का आदेश है। **संस्कारविधिः** के अग्निहोत्र प्रकरण में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी लिखते हैंः 'जैसे सायं प्रातः दोनों सन्धिबेलाओं में सन्ध्योपासना करें, इसी प्रकार दोनों स्त्री-पुरुष अग्निहोत्र भी दोनों समय नित्य करें ।'

पञ्चमहायज्ञविधिः में अग्निहोत्र की व्याख्या करते हुए स्वामी दयानन्द जी बताते हैं – 'अग्नि वा परमेश्वर के लिए जल और पवन की शुद्धि, वा ईश्वर की आज्ञा पालन के अर्थ होत्र जो हवन अर्थात् दान करते हैं, उसे **अग्निहोत्र** कहते हैं।' इस कृत्य को नियम पूर्वक करने वाला अग्निहोत्री कहलाता है। दैनिक अग्निहोत्र के अनेक महत्वपूर्ण लाभ बताए गए हैं, जैसे गृह वातावरण की शुद्धि, रोग पैदा करने वाले कीटाणुओं का विनाश तथा पारिवारिक जीवन में सुख, शान्ति एवं समृद्धि का संचार। प्रतिदिन दो बार अगर न हो सके तो केवल प्रातः कोई भी, बड़े आराम से, अग्निहोत्र करके अपने काम धाम में लग सकता है क्योंकि यह कृत्य अधिकाधिक पंद्रह मिनट में पूरा हो जाता है।

संस्कारविधिः के अग्निहोत्र प्रकरण में स्वामी दयानन्द जी बताते हैं कि दैनिक सन्ध्या के अन्त में नमस्कार मन्त्र के बाद **'शन्नो देवी०'** मन्त्र पढ़के, तीन आचमन करके अग्न्याधान, समिदाधान, जल प्रेक्षण करके, नित्य यज्ञ के लिए निर्धारित मन्त्रों से आहुति दें। ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना और पंचाहुति का ज़िक्र नहीं है। **पञ्चमहायज्ञविधिः** में स्वामी जी बताते हैं कि अग्नि प्रदीप्त करके (बिना मन्त्र से) **'सूर्योज्योति०'** से आहुति देना आरम्भ करें। निम्न विधियों का ज़िक्र नहीं है – ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना, अग्न्याधान, समिदाधान, जल प्रोक्षण, पंचाहुति । यज्ञ की समाप्ति **'ओं आपो ज्योति...'** और तीन बार **'ओं सर्वं वै पूर्णं'** से होती है । **'ओं यां मेधां०, ओं विश्वानि देव०, ओं अग्ने नय०'** को उल्लेख नहीं है। इससे अग्निहोत्रियों के मन में भ्रम उत्पन्न होता है कि दोनों में से किस विधि को अपनावें।

आचार्य विश्वश्रवाः 'व्यास' के प्रधानत्व में **सार्वदेशिक धर्मार्यसभा** ने सब की सुविधा के लिए तथा दैनिक यज्ञ की सम्पन्नता में एकरूपता लाने हेतु अग्निहोत्र की निम्न पद्धति निर्धारित की है, जो यज्ञपद्धतिप्रकाशः पुस्तक में प्रकाशित है और सर्वमान्य है –

१. आचमन, अंग स्पर्श
२. ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना के आठ मन्त्र।
३. अग्न्याधान, समिदाधान, पञ्चाहुति, जल प्रोक्षण।

अब यहाँ से नित्य यज्ञ के लिए निर्धारित १६ मन्त्र ....

४. आघारावाज्यभागाहुति (ओं अग्नये.....) - **४ मन्त्र।**
५. सूर्यो ज्योति०.. (प्रातः) ***अथवा*** अग्निर्ज्योति० ... (सायं) - **४ मन्त्र** ।
६. भूरग्नये प्राणाय० ... से अग्नि नय सुपथा० ... तक - **८ मन्त्र** ।
७. पूर्णाहुति - ओं सर्वं वै पूर्णं - **३ बार** ।

गतांक से आगे

मधुर वाणी रहस्य

प्रियम्वदा जीबन

संत स्वभाव के लोगों के मन में सदा उत्तम विचार उत्पन्न होते हैं। वे सदा संसार की भलाई ही चाहते हैं। असंत स्वभाव के लोग हमेशा दूसरों को कष्ट पहुँचाने वाले कुविचार ही दर्शाते हैं। संत और असंत दोनों दुख पहुँचाने वाले होते हैं। संत से अलग होकर बहुत दुख होता है और असंत के संग में रहकर अनेक कष्टों को झेलते हैं।

संगठन सूक्त 'ऋग्वेद अंतिम सूक्त'

ओं समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित मेषाम् ।
सामानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः समानेनः वो हविषा जुहोमि ।।

अर्थ – सबका मंत्र-ध्येय एक समान हो । कार्य-कर्ताओं की समिति एक विचार वाली हो ।

उनके मन एक विचार-शक्ति से प्रेरित होकर कार्य करें ।

सब एक-समान ध्येय और उद्देश्य से मिलकर अपने यज्ञ-कार्य को पूर्ण करें।

कविता का रूप –

'हो विचार समान सबके चित मन सब एक हों।
ज्ञान देता हूँ बराबर भोग्य पा सब नेक हों ।'

अतः परिवार, समाज एवं राष्ट्र की व्यवस्था को सुधारने के लिए श्रेष्ठतम विचार होना अति आवश्यक माना गया है। हमारी आबादी एवं बरबादी सब विचारों पर निर्भर है। विचारों में यदि विकार आ गया तो विष के समान शरीर में फैलता है। विचार को जैसा संप्रेषित किया जाता है वही आप में उभरता है। वाणी में माधुर्य लाओ एवं विचार को पवित्र बनाओ।

OM

<u>To all the Presidents / Secretaries and members of Arya Samaj branches in the district of Plaines Wilhems.</u>

The Plaines Wilhems Arya Zila Parishad

in collaboration with

Council of Religions and Vacoas Arya Samaj
under the aegis of
ARYA SABHA MAURITIUS
is organising a
Workshop for Training of Trainers to empower our youths and social leaders, and our Pandits and Panditas in the crusade against HIV/AIDS.

Venue : Vacoas Arya Samaj (Compound of P.C.K Aryan Vedic School), Vacoas.
Date : Saturday 15th June 2013.
Time : 10.00 a.m. to noon.

Each Samaj is strongly recommended to delegate two members to participate in the sensitising programme and help in the prevention of HIV/AIDS.

Your presence will be highly appreciated.

R. Gowd *President* S. Ramdoss *Secretary* D. Damree *Treasurer*

गतांक से आगे

ऋषि दयानन्द की वेदाधारित समग्र क्रान्ति

डॉ० भवानीलाल भारतीय

स्वामी दयानन्द की आध्यात्मिक क्रान्ति - प्राणिशास्त्र की दृष्टि से तो मानव तथा पशु में कतिपय समानताएँ हैं जिन्हें सूक्तिकार ने आहार, निद्रा, भय तथा मैथुन के रूप में वर्गीकृत किया है किन्तु इन दोनों को पृथक् करने वाला तत्व 'धर्म' संज्ञक है जो मनुष्य को सत्यासत्य, न्याय-अन्याय तथा कर्तव्य-अकर्तव्य की प्रतीति कराकर उसे सत्य, न्याय तथा स्वकर्तव्य में नियोजित करता है। तथापि मनुष्य की आध्यात्मिक उन्नति इस बात पर निर्भर है कि क्या वह अपने दुर्गुणों, दुर्व्यसनों तथा दुरितों को त्यागकर भद्रता को ग्रहण करने के लिए तत्पर है? सद्मार्ग की ओर बढ़ने और दुरित त्याग की प्रवृत्ति तब तक सम्भव नहीं है जब तक कि वह इसके लिए उस परमात्मा से विनय न करे जो वस्तुतः उसका शास्ता, प्रेरक तथा धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देनेवाला है। वेदोदधि में विद्यमान सहस्त्रों मुक्तामणियों में से स्वामी दयानन्द ने एक ऐसा ही मन्त्र चुना जिस पर आचरण कर मनुष्य आध्यात्मिक उन्नति के सोपान पर निरन्तर बढ़ता जाता है और अन्ततोगत्वा अपने अन्तःकरण को सर्वथा निर्मल बनाकर श्रेयपथ का पथिक बन जाता है। प्रासंगिक मन्त्र इस प्रकार है –

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।
यद् भद्रं तन्न आ सुव ।।

यजु० ३०/६

स्वामी दयानन्द ने इस मंत्र का अर्थ इस प्रकार किया है – 'हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त, शुद्ध स्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर ! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुख दूर कर दीजिए । जो कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं वह सब हमको प्राप्त कराइए।' *(संस्कारविधि सामान्य प्रकरण)*

इस प्रकार ऋषि दयानन्द ने बताया कि आध्यात्मिक पथ का पथिक बनने वाले के लिए आवश्यक है कि वह सर्वप्रथम स्वयं को दुरितों और दोषों से दूर रखे, तत्पश्चात् स्वयं में सद्गुण, सत्कर्म तथा भद्रभावों का संचार करने के लिए परमात्मा से प्रार्थना ही नहीं करे, एतदर्थ पुरुषार्थ भी करे। इस मन्त्र को स्वामी जी ने वैदिक आचार शास्त्र का मूर्धास्थानीय कहा है तथा स्वयं के वाङ्मय में उसकी सभी महत्वपूर्ण प्रसंगों में योजना की है। यह दयानन्द का सर्वाधिक प्रिय मन्त्र है।

स्वामी दयानन्द की धार्मिक क्रान्ति-धर्माचरण से मनुष्य को अध्यात्म के पथ पर चलने की शक्ति मिलती है। स्वामी दयानन्द की दृष्टि में धर्म वह तत्व है जो सत्य और न्याय से युक्त है, जिसमें पक्षपात का लेशमात्र भी नहीं है तथा जिसे जानने के लिए वेदों का ज्ञान होना आवश्यक है। यह धर्म ही है जिसका मूल सच्ची आस्तिक भावना में निहित रहता है। स्वामी दयानन्द ने अनुभव किया था कि आज सर्वत्र ईश्वर के स्थान पर जड़ तत्वों की पूजा हो रही है और सच्चिदानन्द लक्षणान्वित वेद-प्रतिपादित निराकार, निर्विकार, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान तथा सर्वव्यापक परमात्मा के स्थान पर पाषाण तथा धातु निर्मित मानवाकृति मूर्तियों को पूजा जा रहा है। इस जड़पूजा के प्रतिकार के लिए उन्होंने भारत के धर्म जगत् में एक नवीन धर्म क्रान्ति का प्रवर्तन किया। इसके द्वारा उन्होंने सामन्यतया मनुष्यमात्र को, और विशेष रूप से भारत के निवासी आर्यों को सन्देश दिया कि वे जड़ वस्तुओं की पूजा का त्याग करें और अप्रतिम बलशाली, यश के धाम उस परमात्मा की आराधना करें जिसकी कोई प्रतिमा या प्रतिकृति नहीं है और न किसी स्थूल प्रतीक के द्वारा

उसे जाना जाता है। इस धार्मिक क्रान्ति के मूल में उन्होंने यजुर्वेद के (३२/२) मंत्र के तत्त्वार्थ को देखा जो स्पष्ट घोषणा करता है कि महान् यशवाले परमात्मा की कोई प्रतिमा या प्रतिकृति नहीं है। यह सर्वत्र व्यापक परमात्मा वेदों के जिन अन्य मन्त्रों में स्मृत तथा व्याख्यात है उनकी प्रतीकें इस मन्त्र के द्वितीयार्द्ध में दी गई हैं। ये परमात्मा प्रतिपादक मंत्र हैं –

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः
पतिरेक आसीत् ।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय
हविषा विधेम ।। *(यजु० १३/४)*

अर्थात् सकल जगत् का उत्पादक परमात्मा सृष्टि के वर्तमान रूप में आने के पूर्व स्वसत्ता से विद्यमान था। उसी ने पृथ्वी तथा द्यौ आदि लोकों को स्वशक्ति से धारण किया है। मनुष्य को चाहिए कि वह उस सुख स्वरूप परमात्मा की उपासना अति प्रेम व विशेष भक्ति से करे। ध्यान रहे कि जब स्वामी दयानन्द से मूर्तिपूजा के खण्डन में किसी वेदमंत्र का प्रमाण माँगा गया तो उन्होंने उपर्युक्त मंत्र को प्रस्तुत किया और दृढ़तापूर्वक बताया कि महान् यशवाले, सर्वव्यापक परमात्मा की कोई आकृति या मूर्ति नहीं है।

एक अन्य मंत्र जिसका संकेत आलोच्य मन्त्र में है, वह भी यजुर्वेद (८/३६) का ही मंत्र है –

यस्मान्न जातः परोऽअन्योऽस्ति य
आविवेश भुवनानि विश्वा।
प्रजापतिः प्रजया संरराणस्त्रीणे ज्योतींषि
सचतेस षोडशी।।

अर्थात् जिस परमात्मा से बड़ा या तुल्य कोई दूसरा नहीं जो समस्त लोकों को स्वयं के भीतर समाये हैं तथा स्वयं भी इन भुवनों में प्रविष्ट हैं, वह प्रजापति परमात्मा अपनी प्रजा में रम रहा है। उसी से सोलह कलाओं का जन्म हुआ है। ऋषि दयानन्द के अनुसार ये कलाएँ हैं – १. ईक्षण (विचार), २. प्राण, ३. श्रद्धा, ४. आकाश, ५. वायु, ६. अग्नि, ७. जल, ८. पृथिवी, ९. मन, १०. अन्न, ११. वीर्य (पराक्रम), १२. तप (धर्म का अनुष्ठान), १३. मंत्र (वेद विद्या), १४. कर्म (चेष्टा), १५. लोक, १६. नाम।

इस प्रकार निराकार, अमूर्त, सर्वशक्तिमान ईश्वर के वेदोक्त स्वरूप का पदे-पदे प्रतिपादन कर स्वामी दयानन्द ने धर्म जगत् में अभूतपूर्व क्रान्ति की। इसी का परिणाम रहा कि धर्म के नाम पर पनपने वाले अन्धविश्वासों तथा धर्मान्धतापूर्ण कृत्यों पर रोक लगी, विचारशील लोगों ने अनुभव किया कि धर्म ओर बुद्धिवाद में कोई विरोध नही है। वस्तुतः युक्ति और तर्क के द्वारा ही वास्तविक धर्म का अनुसन्धान किया जा सकता है। *(दृष्टव्य-मनुस्मृति)*

क्रमशः

<u>प्रेषक</u> – श्री हरिदेव रामधनी,आर्य रत्न, महामन्त्री आर्य सभा मोरिशस

आर्य जगत् - सप्ताह रविवार, ०३ मार्च २०१३

MOTHER'S DAY CELEBRATION

POEM : "ODE TO ALL MOTHERS"

Sookraj Bissessur, B.A. Hons

The proclamation **"Matri Devo Bhava"** spells out that sons and daughters should worship the mother, pay tribute to her during her lifetime for her merits, - such worship is the very form of devoted service to keep her always happy and gay.

"Nothing ever created or invented can give (us) – a bigger life than a MOTHER"

Mother thou art the very embodiment of creative and thinking power.

Born from the mother's womb.

An eternal debtor owes her from womb to tomb.

She has given me birth.

And has always protected and saved me from every blame, injustice and curse.

For me she is always an epitome of kindness.

And also she has always been a symbol of love and goodness.

Always she has provided me – with all that a son needs.

And has always been near and dear to me, when my heart weeps and bleeds.

Mother – your thought(s) are always, immersed in my breath.

Since a mother's thought is always – centred round to her children.

Never should we hurt the very feeling(s) of motherhood.

Because it's said that even death is being defeated – with motherhood.

And it should be also noted that (all mothers) – always suffer hard pain and intense grief.

Mother thou art again the very embodiment of a goddess.

At times – thou resemble the sacred – Ramayana of Tulsidas.

At times – thou virtually appear to be a thorough knowledge of Bhagvad Gita.

Sometimes thou seem to be Dayanand's Magnum Opus – Satyartha Prakash / Light of Truth.

And of times, thou eventually resemble the Holy Bible.

Mother Dear, my every breath is your spiritual, blessing and divine benediction.

Mother Dear, without you – my every wish and prayer is insipid, void less and meaningless.

Mother Dear, without you – my every aim, vocation, hope and aspiration is again meaningless and tasteless.

That is why - all mothers hold their children's hands for a while, but their heart(s) forever.

That is why – famous Napolean Bonaparte has so rightly pointed out:-- *"Give me good mothers – I will give to thee good nations".*

That is why – the Vedas – as well as Modern Sciences recognise:- " The lap of a mother – as the greatest University of the world".

Ultimately, it virtually goes without saying that:- In this world of tension, pretension, sensation, humility, humiliations and thirst – the thirst, quest and search for mother – is in every person's heart, mind and soul.

LOVE ALL

Love all, hate none.
Bless all, curse none.
Serve all, discriminate none.
Unite all, divide none.
Praise all, criticise none.
Please all, bore none.
Encourage all, humiliate none.
Embrace all, abandon none.
Empower all, marginalise none.
Uplift all, confuse none.
Help all, exploit none.
Tolerate all, hurt none.
Forgive all, judge none.
Spiritualise all, convert none.
Humanise all, demonise none.
Renounce all, conquer none.
Comfort all, torture none.
Heal all, infect none,
Befriend all, terrorise none.
Harmonise all, agonise none.
Awaken all, hypnotise none.
Remember all, forget none.
Accept all, reject none.

Use your head and heart to be human, humble and honest, then health, happiness and harmony will come your way. If you apply the LOVE ALL mantra and follow your mission, you will perform miracles and achieve moksha. Life is a religion of love, service and unity.

Dipnarain Beegun

The Mauritius Arya Yuvak Sangh
under the aegis of
Arya Sabha Mauritius
is organising a series of competitions :--

1. Guru Mantra Uccharan & Interpretation (Bhavarth) for children aged 7 years.
2. Meal Prayer Uccharan & explanation Age limit 7 to 8 years old.
3. Morning Prayer Uccharan for aged 9 years old.
4. Bed Time Prayer Uccharan for aged 10 years old.
5. Sandhya Uccharan and explanation for a team of 6 children aged 11-15 years.
6. Quiz Competition on Satyarth Prakash Groups of 3 Age limit 15–25 years.

Closing Date for sending your names :- 30th June 2013.

O M
The President & Members
Grande Retraite Arya Samaj & Arya Mahila Samaj
are organising a
Ten Day Pravachan
on the occasion of
Satyartha Prakash Jayanti

Venue : Ketha Road, Grande Retraite.
Date & Time : Fri. 14 June to Sat. 22 June 2013 -- 5.00 p.m. to 8.00 p.m.

Sunday 23 June 2013 - 9.00 a.m to Noon.

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1, Maharshi Dayanand St, Port Louis, Tel: 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778, Email : aryamu@intnet.mu, www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादकः डॉ० उदय नारायण गंगू, *पी.एच.डी., ओ.एस.के, आर्य रत्न*
सह सम्पादक : सत्यदेव प्रीतम, *बी.ए., ओ.एस.के., सी.एस.के., आर्य रत्न*
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य भूषण*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
Printer : BAHADOOR PRINTING LTD. Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles, Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

Om ! Vidyām chāvidyām cha, yastad védabhayam saha. Avidyayā mrityum tirtavā, vidyayā mritamashnuté.

cont. from pg. 1

C'est notre 'Dharma' qui nous guide dans la bonne voie pour mener à bien toutes nos actions quotidiennes.

Dans le contexte de ce 'mantra' ou de ce verset du Yajur Véda il y a encore d'autres implications, c'est-à-dire, d'autres études à ne pas négliger : 'Swādhyāya' en Hindi. Cela veut dire que l'on doit entreprendre l'étude approfondie et régulière des Vedas qui nous est très bénéfique dans la pratique de Yoga.

Cette étude nous mène vers l'acquisition de '*Tatwajyān*' en Hindi ou la Métaphysique en Français, c'est-à-dire, la science des êtres particuliers: l'âme, Dieu et l'Univers.

Le point culminant de toutes ces études est *'Atmashāksātkār'* en Hindi ou 'Self-réalisation' en Anglais. C'est le stage suprême du Yoga appelé 'Samādhi' où l'on découvre soi-même.

On s'aperçoit que l'on n'est pas le corps physique, mais une âme ou Atmā en Hindi – une entité séparée et immortelle et avec d'autres attributs.

On arrive à comprendre que le corps physique n'est qu'une enveloppe temporaire qui nous est pourvue par le Seigneur afin de donner à notre âme un moyen de s'exprimer et d'accomplir de bonnes actions ('Karma' en Hindi) pour atteindre la béatitude ou 'Moksha'.

Avidyā – Ici ce mot a trois sens ou trois attributs suivants :

(a) Tout d'abord, il faut comprendre que 'Avidyā' ne veut pas dire l'ignorance.

(b) Dans ce contexte 'Avidyā' signifie toutes les démarches, les actions et les voies qui sont loin de la vérité, de la moralité, de l'éthique et de la rationalité, par exemple :

(i) Adorer les objets inanimés de la nature au lieu de Dieu, notre Seigneur, qui est vivant, omniprésent, tout-puissant, resplendissant, incorporel et le Maitre Suprême de l'Univers.
(ii) De faire des donations conséquentes là où il ne faut pas (par ignorance) et cela profite les escrocs, les charlatans, les faux dévots.
(iii) Faire de la charité aux personnes qui ne méritent pas (des individus oisifs qui sont en bonne santé, mais qui ne veulent pas travailler).
(iv) D'être indifférent ou de mépriser et d'ignorer les personnes pauvres, les malades, les faibles, les orphelins, les laissés – pour – compte.
(v) De s'engager dans des actes immoraux et répréhensibles (Banditisme).
(vi) De persécuter les autres par sa force physique ou par le pouvoir de sa richesse, de son intelligence ou de sa position supérieure dans une institution ou dans une entreprise. (Position power en Anglais)

(c) Avidyā est aussi la voie ou la science de l'action ('Karma' en Hindi).

Conséquemment, cela cause un tort immense aux personnes qui s'adonnent aux activités énumérées plus haut – (b) i - vi

Pour mieux entamer nos actions, il nous faut adopter, pendant toute notre vie, le principe d'entreprendre notre travail avec beaucoup de dévouement, d'abnégation et de ne jamais se départir de ce principe ou de cette règle d'or.

Par la suite notre action portera ses fruits. Elle nous apportera dans son sillage le progrès matériel, intellectuel et spirituel que l'on nomme 'Dharma'. Ceci nous mènera vers le but ultime de notre vie.

C'est par le truchement de l'action que l'homme arrive à franchir tous les obstacles de la vie et cela s'appelle triompher de la mort dans le contexte de ce mantra.

D'ailleurs, c'est par la connaissance ou le savoir ('jyāna' ou 'Vidyā' en Hindi) et avec le concours de l'action ('Avidya' ou 'Karma' en Hindi) que l'on atteint la béatitude ou 'Moksha', le but ultime de la vie humaine sur la Terre.

Cependant, certains sages ont donné une interprétation différente, mais aussi pertinente à ces deux mots-clefs : 'Vidyā' et 'Avidyā' du mantra en question. Ils ont défini 'Vidyā' comme la connaissance du domaine spirituel, et 'Avidyā' comme la connaissance du monde 'matériel'.

Ils veulent nous faire comprendre que ces deux atouts : 'Vidyā' et 'Avidyā' nous sont indispensables dans la vie. Il faut certainement acquérir la compétence dans ces deux domaines. Il ne faut pas donner une importance particulière à 'Vidyā' au détriment de 'Avidya' ou vice versa.

Nous n'allons jamais progresser vers notre but. Il faut qu'il y ait un ajustement de notre part car ces deux atouts doivent aller de pair. Il nous faut trouver le juste milieu entre 'Vidyā' et 'Avidya' si nous voulons atteindre le but ultime de la vie – la béatitude ou 'Moksha'.

En conclusion nous pouvons dire que ces deux interprétations convergent vers le même but – la béatitude ou 'Moksha'.

Il est évident que la forme (l'interprétation de ce mantra) est différente, mais fondamentalement le but ultime est le même dans les deux cas.

मोका आर्य ज़िला परिषद्

सत्यार्थ प्रकाश जयन्ती

स्थान	तिथि	समय
अप्पर दागोच्येर आर्य समाज एवं महिला समाज	रविवार २ जून २०१३	प्रातः ८.०० बजे
मोका आर्य समाज एवं महिला समाज	रविवार ९ जून २०१३	प्रातः ७.३० बजे
जुब्रैय आर्य समाज एवं महिला समाज	रविवार ९ जून २०१३	प्रातः ९.३० बजे
काँतोरेल आर्य समाज एवं महिला समाज	शुक्रवार १४ जून २०१३	सायंकाल ६.३० बजे
लावेनिर आर्य समाज एवं महिला समाज एवं मोका आर्य परिषद्	रविवार १६ जून २०१३	सायंकाल ४.०० बजे
लोवर दागोच्येर आर्य समाज एवं महिला समाज	गुरुवार २७ जून २०१३	सायंकाल ४.३० बजे
नुवेल दे कुर्वेत आर्य समाज एवं महिला समाज	रविवार २ जून, ९ जून, १६ जून, २३ जून और ३० जून	रात्रि में ७.१५ बजे